


I'm not robot  reCAPTCHA

Continue

91128709.714286 11389941080 17424654.116279 621460.13157895 9918038120 9604714.5222222 82562221560 2101155609 37402478100 7995922.6081081 10590834.256098 36456614019 60082173049 13095100920 12756768.97561

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
 बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
 बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौँ पवन-कुमार ।
 बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥
 जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।
 राम दूत अतुलित बल धामा, अञ्जनि-पुत्र पवनसुत नामा ।
 महाबीर विक्रम बजरौँ, कुमति निवार सुमति के सौँ ।
 कंचन अल विराज सुवेष, कानन कुंडल कुंचल केला ।
 हथ अरु पदा सिंगरे, कपि पूंज जनेउ साजै ।
 मंत्र कुन केओ मंत्र, तेन प्रणव मान जय बरन ।
 विद्यावन मुषी अति चातुर, राम काज करिये को अतुर ।

श्री हनुमान चालीसा (हिन्दी में)

॥दोहा॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
 बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौँ पवन-कुमार ।
 बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

॥चौपाई॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
 जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।
 अञ्जनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥

महाबीर विक्रम बजरङ्गी ।
 कुमति निवार सुमति के सङ्गी ॥३॥

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा ।
 कानन कुण्डल कुञ्चित केसा ॥४॥
 हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
 काँधे मूँज जनेउ साजै ॥५॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन ।
 तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥६॥
 बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
 राम काज करिबे को आतुर ॥७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
 राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
 बिकट रूप धरि लङ्क जरावा ॥९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
 रामचन्द्र के काज सवारे ॥१०॥

लाय सञ्जीवन लखन जियाये ।
 श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥

रघुपति कीह्नी बहुत बड़ाई ।
 तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुहारो जस गावैं ।
 अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥१३॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
 नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
 कबि कीबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीह्ना ।
 राम मिलाय राज पद दीह्ना ॥१६॥

तुहारो मन्त्र बिभीषन माना ।
 लङ्केस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥

जूग सहस्र जोजन पर भानु ।
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
 जलधि लाधि गये अचरज नाहीं ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते ॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।
हीत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२॥

आपन तेज सह्यारी आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥

भूत पिशाच निकट नहीं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥२५॥

सङ्कट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥३०॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हारे पासा ।
सदा रही रघुपति के दासा ॥३२॥

तुम्हारे भजन राम की पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥३५॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥३८॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेर ।
कीजे नाथ हृदय महँ डेर ॥४०॥

॥दोहा॥

पवनतनय सङ्कट हरन मङ्गल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

www.HanumanChalisaLyrics.com

